नगर का वर्गीकरण

नगर–अर्थ– नगर का तात्पर्य उस बस्ती से है, जहां रहने वाले लोग एक विशिष्ट अधिवासीय संरचना के अंतर्गत अधिवासित होते है तथा वे मुख्यतः गैर प्राथमिक कार्यो में लगे रहते है। अतः सभी नगर एक जैसे प्रतीत होते है, लेकिन वे एक प्रकार के नहीं होते है। उसी तथ्य को ध्यान में रखकर अनेक भूगोलवेत्ताओं ने नगरों की वर्गीकरण की योजना प्रस्तुत की है।

नगरों के वर्गीकरण के चार मुख्य आधार हैं–

1. विकास के आधार पर (उत्पति के आधार पर) नगर
2. जनसंख्या के आधार पर नगर
3. स्थानीयकरण या बसाव स्थान के आधार पर नगर
4. कार्यिक आधार पर नगर

1. विकास अवस्था या उत्पति के आधार पर नगरों का वर्गीकरण–

विकास अवस्था को आधार मानते हुए दो महत्वपूर्ण योजनाएं प्रस्तुत की गई है, ये है– ममफोर्ड की योजना, ग्रिफिथ टेलर की योजना। ममफोर्ड ने उत्पति के आधार पर नगरों को 5 वर्गो में, जबकि टेलर ने उसे 7 वर्गो में बांटा है।

ममफोर्ड के अनुसार नगरों का वर्गीकरण

i. इयोपोलिस (Eopolis) – वह नगर जो विकास की प्रारम्भिक अवस्था में है और अकारिकी विकसित नहीं हुआ है। अधिकतर ग्रामीण बाजार उसके अर्न्तगत आते है।

ii. पोलिस (Polis) – वह नगर जिसकी अकारिकी विकसित होती है। यह प्रारंभिक विकसित नगर है।

iii. मेट्रोपोलिस (Metropolis) – यह वृहद जनसंख्या वाला होता है, जिसकी उपनगर विकसित हुए हो– कोलकत्ता, मुम्बई, दिल्ली।

iv. मेंगालोपोलिस (Megalopolis) – जब किसी भौमिकीय प्रदेश का नगरीकरण हो गया हो तथा प्रदेश में नगरीय संस्कृति और बस्ती का विकास हो, अर्थात गाँवों में रहने वाले लोग भी नगरीय कार्यो से जूड़े हों।

- USA का मेगालोपोलिस बोस्टन से स्पैरोज प्वाइंट तक फैला है, इन दोनों के बीच न्यूयार्क, वाशिंगटन, फिलाडेल्फिया, रिचमांट, बाल्टिमोर आदि महानगर अवस्थित है। कुल क्षेत्र की लंबाई 1100 किलोमीटर है। दूसरा क्षेत्र टोकियो, याकोहामा, कावासाकी क्षेत्र है।
- तीसरा एमस्टरडम, रोटरडम, हेग का क्षेत्र (नीदरलैण्ड) है।

v. टायरेनोपोलिस (Tyranopolis) – यह नगर के पतन की अवस्था या विकास के चरम बिंदु के बाद की अवस्था है। लंदन, पेरिस आदि।

ग्रिफिथटेलर का वर्गीकरण

ग्रिफिथ टेलर ने मानवीय जीवन चक्र की तरह ही नगरों के विकास की अवस्थाओं का निर्धारण किया है। इन्होंने नगरो को मानव के विकास की अवस्थाओं की तरह ही निम्न सात वर्गो में बांटा है।

1. पूर्व शैशवास्था (Sub Infantile stage)
2. शैशवावस्था (Infantile Stage)
3. बाल्यावस्था (Juvenile Stage)
4. किशोरावस्था (Adolescent Stage)

5. प्रौढ़ावस्था (Mature Stage)

6. अन्तर प्रौढ़ावस्था (Late Mature Stage)

7. वृद्धावस्था (Senile Stage)

1. पूर्वशैशावास्था में किसी बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन, फेरी प्वांइटस या परिवहन साधनों के मिलन केन्द्रो पर गैर प्राथमिक कार्यो का विकास होता है।

2. शैशवास्था में गैर प्राथमिक कार्य करने वाले बस्ती का विकास समान्यतः सड़क के किनारे लंबी दूरी तक हो जाता है। नगर कोई अकारिकी नहीं बनाता है, लेकिन सड़क के किनारे लंबी दूरी तक बाजार के कार्य प्रारम्भ हो जाते है।

3. बाल्यावस्था में अकारिकी तथा सड़क प्रारूप का विकास हो जाता है।

4. किशोरावस्था में कार्यिक विशेषीकरण विकसित हो जाता है, जैसे नगर के बीच में CBD का विकास हो जाता है। आय के आधार पर अधिवासीय क्षेत्र एवं मलिन बस्तियां (Slum) भी विकसित हो जाती है।

5. प्रौढ़ावस्था में नगरों में बहुमंजली इमारतों में वृद्धि हो जाती है। यह ऐसी अवस्था है, जब नगर की एक ही भूमि का कई बार उपयोग होता है। यह नगरों के महानगर बनने की प्रवृति है।

6. अंतिम प्रौढ़ावस्था में नगर का क्षैतिज विकास हो जाता है। उसी अवस्था में नगर Metropolis या Megalopolis की अवस्था प्राप्त करता है। इसी अवस्था में ग्रामीण नगरीय उपांत तथा उपनगर (Satelite town) विकसित होते है।

7. वृद्धावस्था में नगर का पतन प्रारम्भ हो जाता है। नगरीय जनसंख्या में कमी आने की प्रवृति आ जाती है।

2. जनसंख्या के आधार पर वर्गीकरण

जनसंख्या के आधार पर भी नगरों का वर्गीकरण किया गया है। विभिन्न देशों में वर्गीकरण के अलग–2 आधार है। जैसे भारत में जनसंख्या के आधार पर नगरों को 6 वर्गो मे बांटा गया है।

प्रथम वर्ग के नगर	–	जनसंख्या 1 लाख या अधिक
द्वितीय वर्ग के नगर	–	50,000 – 99,999
तृतीय वर्ग के नगर	–	20,000 – 49,999
चतुर्थ वर्ग के नगर	–	10,000 – 19,999
पंचम वर्ग के नगर	–	5,000 – 9,999
छठे वर्ग के नगर	–	5,000 – से कम जनसंख्या

लेकिन अधिकतर भूगोलवेताओं ने नगरों को जनसंख्या के आधार पर 4 वर्गो में बांटा है। ये है– शहर (Town), नगर (City), महानगर (Metrocity), मेगासिटी (Megacity)। शहर, नगरीय बस्ती है, जिसकी जनसंख्या 1 लाख से कम हैं। नगर की जनसंख्या 1 लाख से 99,999 होता है।

महानगर की जनसंख्या 10 लाख से 49,99,999 के बीच तथा मेगासिटी का तात्पर्य 50 लाख से अधिक जनसंख्या वाला नगर। 1991 में मेंगासिटी की संख्या विश्व में 35 थी।

3. बसाव स्थान और बसाव स्थिति के आधार पर वर्गीकरण–

वसाव स्थान का तात्पर्य उस जगह से है, जहां नगर का विकास हुआ है, जबकि वसाव स्थिति का तात्पर्य उस भौगोलिक प्रदेश से है,जो नगर के चारों ओर अवस्थित होता है। ये दोनो ही भौगोलिक परिस्थितियां नगर के विकास, उसके आकार, आकारिकी एवं कार्यिक संरचना को प्रभावित करता है। अतः इन दोनों को मिलाकर नगर के स्थानीयकरण का कारक कहते है। उस आधार पर भी नगरों का वर्गीकरण किया गया है। इस दृष्टि से नगरों को प्रथमतः दो भागों में बांटा जाता है–

1. जल सविधा स्त्रोत आधारित नगर (Water City)

2. जल स्त्रोत से दूर अवस्थित नगर (Non-water City)

जल स्त्रोत पर आधारित नगर को हम तीन भागों में बांटते हैं–

i. नदी किनारे बसे नगर

ii. झील के किनारे बसे नगर

iii. तटीय नगर, समुद्र किनारे बसे नगर।

नदी किनारे बसे नगर– नदी किनारे विकसित नगर को 6 भागों में बांटते है।

i. जल प्रपात के किनारे विकसित नगर – भेड़ाघाट नगर (जबलपुर), नियाग्रा नगर (कनाडा), कांगों नदी के किनारे स्टेनले।

ii. नदी के घुमाव पर वसे नगर – नदी का धुमाव कठोर चटट्ान के कारण होता है, अतः यहां बाढ का खतरा नही रहता है।

iii. संगम नगर–नदी के बीच होता है। यह हमेशा त्रिभुजाकार छोटा है। इलाहाबाद, जमशेदपुर, वुहान आदि नगर।

iv. प्राकृतिक बांध के किनारे स्थित नगर जैसे–पटना नगर। यह जलोढ़ मिटट्ी का क्षेत्र है एवं बाढ़ मुक्त है।

v. पुल के किनारे बसे नगर – पुल बनने के कारण नदी के दोनों तरफ नगर का विकास होता है। श्री नगर, जहां झेलम पर पुल बना है। लंदन, टेम्स नदी पर पुल के कारण दोनों किनारों पर नगर विकसित है।

vi. ज्वारीय नगर – कोलकाता।

झील के किनारे विकसित नगर– उसका विकास मुख्यतः मत्स्यन, व्यापार, पर्यटन, परिवहन सुविधा के कारण होता हैं। नैनीताल, पुष्कर, महान झील के नगर (USA) शिकांगो, गौरी, डुलूथ इत्यादि।

समुद्र के किनारे या तटवर्ती नगर– तटीय नगरों का विकास समुद्र के निकट होता है। उसे समान्यतः 4 वर्गो में बांटते है।

(i) **समुद्री पुलीन नगर** – यहां पर्यटन का विकास होता है, जिससे नगरीय बस्ती विकसित होती हैं – मियामी बीच, सूरत।

(ii) **ज्वारनदमुख नगर** – यह समान्यतः बन्दरगाह नगर होते है।

(iii) **लैगून नगर** – लैगून के किनारे के क्षेत्र मत्स्यन, बंदरगाह तथा पर्यटन के केन्द्र होते है, ऐसी स्थिति में लैगून के किनारे नगरीय बस्ती का विकास होता है जैसे– उड़ीसा का चिल्का नगरीय वस्ती।

(iv) **द्वीपीय नगर** – अनेक नगर अपने द्वीपीय भौगोलिक स्थिति के कारण विकसित होते है। द्वीप के लोगों की आवश्यक जरूरत हेतु एवं मुख्य भूकंप से सम्पर्क हेतु द्वीपीय नगर विकसित हो जाते है। पोर्ट व्लेयर और कवरती द्वीपीय नगर है, मुम्बई का भी द्वीपीय विस्तार हैं।

जल सुविधा/स्त्रोत से दूर स्थित नगर कई प्रकार के होते हैं–

गैर जलीय स्त्रोत क्षेत्र में भी भौगोलिक स्थिति और आर्थिक विशेषता के कारण विशेष प्रकार के नगरों का विकास होता है। उनके विकास में जलीय सुविधाओं की भूमिका सीमित होती है। भौगोलिक दृष्टिकोण से इन नगरों को हम 6 भागों में बांटते हैं।

(i) **सीमांत नगर**– किसी राज्य के समीपवर्ती राजनीतिक सीमा क्षेत्र में सीमावर्ती कार्यो के कारण नगरीय बस्ती का विकास होता है। जैसे– पिथौरागढ़, कारगिल, पूंछ, राजौरी।

(ii) **परिवहन साधनों में परिवर्तन लाने वाले स्थान पर** (Break-and-Bulk Town) – एक परिवहन मार्ग समाप्त होता है, दूसरा प्रारम्भ होता है। अतः यहां दो प्रकार के परिवहन साधन विकसित होते है। यहां मुख्यतः समान को रखना, उतारना, चढ़ाना आदि काम विकसित होते है। जैसे– – काढगोदाम, उत्तराखंड (UP), कटरा (J.K.), गौरीकुड, गंगोत्री।

(iii) **धार्मिक नगर**– मक्का, वाराणसी, येरूसलेम, वेटिकन सिटी, गया, हरिद्वार।

(iv) **शिक्षा के नगर** – पिलानी, आक्सफोर्ड, रूड़की, नेटरहाट, शांति निकेतन।

(v) केन्द्रीय स्थिति से विकसित नगर– अगर कई दिशाओं से रेलवे या सड़क मार्ग आकर मिलते है, तो नगर विकसित होते हैं। मुगलसराय, शिकागों, किऊल, मधुपुर।

(vi) सेवा केन्द्र नगर– ये समान्यतः आन्तरिक बाजार होते है, उसे ग्रामीण बाजार कहते है। कई गांवों के मध्य एक बाजार केन्द्र विकसित होते है, जिसे सेवा केन्द्र कहते है। यह आवश्यक नहीं कि उस नगर की मान्यता हो।

4. कार्यिक आधार पर नगरों का वर्गीकरण–

कार्यिक आधार पर नगरों का वर्गीकरण नगरों के द्वारा किए जाने वाले विशिष्ट कार्य के अनुसार किया जाता है।

सभी नगरों द्वारा द्वितीयक, तृतीयक प्रकार के कार्य किया जाता है, लेकिन वे कार्य अलग–अलग विशिष्टता रखते है। इस कार्यिक विभिन्नता एवं विशेषता के आधार पर नगरों का कार्यिक वर्णन किया जाता है। उस संदर्भ में कई योजनाएं प्रस्तुत की गई है। उसमें मैकेन्जी, रूसो की योजनाएं महत्वपूर्ण है।

रूसों ने कार्यिक दृष्टि से नगरों को दो भागों में बांटा है–

(i) सक्रिय नगर (ii) निष्क्रिय नगर में

सक्रिय नगर वे है, जो गत्यात्मक कार्यों को करते है। इन्हें 6 भागों में बांटा है–

(i) राजधानी नगर (ii) सांस्कृतिक नगर

(iii) सुरक्षा नगर (iv) उत्पादन नगर

(v) संचार नगर

निष्क्रिय नगर में उन्होंने सिर्फ अधिवासीय नगर को रखा है, उसमें सिर्फ अधिवास का कार्य होता है। प0 देशों में सभी बड़े नगरो के बाहर ऐसा नगर होते है। दिल्ली में दिल्ली के बाहर नरेला नगर, बंगलोर के बाहर थेला हंका नगर।

मैकेन्जी ने कार्यो की दृष्टि से नगरों को चार भागों में बांटा है–

1. प्राथमिक सेवा केन्द्र नगर–ये कुछ ऐसे छोटे नगर होते है, जो ग्रमीण क्षेत्रों के मध्य ग्रामों के ग्रामीणों की सेवा के लिए बसे होते है।
2. वाणिज्यिक नगर–वाणिज्य नगरों का महत्वपूर्ण कार्य वाणिज्य एवं व्यापार है।
3. औद्योगिक नगर–उद्योग के विकास के कारण बहुत सारे नगर वसते है। खनन और तेल निकालने वाले नगर भी उदाहरण है।
4. अन्य कार्यो के नगर– अन्य कार्यो के लिए विकसित नगर बहुत ज्यादा संख्या में नही होते है। उपरोक्त तीनों नगरों के अलावे अन्य नगर उसी वर्ग में है।

एच. ई. जेम्स (H.E. James) का वर्गीकरण– यह वर्गीकरण भारतीय नगरों पर आधारित है, जो विश्वव्यापी मान्यता रखता है। उसमें भारतीय नगरों को 6 भागों में बांटा गया है।

1. राजधानी नगर– जिला प्रशासन कें नगर, राज्यों की राजधानियां आदि आती है। इस वर्ग में प्रशासनिक कारणों से विकसित सभी नगर आते हैं गाजियावाद, लखनऊ, दिल्ली, पटना, कोलकता, कानपुर, जयपुर।
2. धार्मिक नगर – उज्जैन, कुरूक्षेत्र, देवधर, हरिद्वार, मथुरा, वाराणसी
3. औद्योगिक नगर – जमशेदपुर, बोकारों स्टील सीटी, धनबाद, गुड़गांव
4. सैनिक छावनी – अम्बाला, रामगढ़ (झारखंड), मेरठ
5. आंतरिक नगर – सेवा कार्य से जूड़े ग्रामों के बीच स्थित नगर जैसे– खुसुरूपुर
6. बंदरगाह नगर– कांडला, सूरत, मछलीपटनम बंदरगाह नगर हैं।

उनके अतिरिक्त कई भूगोलवेत्ताओं ने सांख्यिकी विधि की मदद से नगरों के कार्यिक वर्गीकरण का प्रयास किया है। ऐसे विद्वानों मे नेल्सन (Nelson USA) का कार्य सबसे महत्वपूर्ण है। दूसरा महत्वपूर्ण योगदान UK के स्काट एवं मैसर का है।

नेल्सन ने मानक विचलन विधि का प्रयोग करते हुए ... निम्नलिखित है (योजना 1955 में आयी थी), मानक विचलन विधि के प्रयोग के कारण कार्यों की गहनता स्पष्ट हुआ। इस दृष्टि से निम्न 10 नगर प्रकार है–

1. विनिर्माण नगर
2. खनन नगर
3. थोक व्यापार नगर
4. खुदरा व्यापार नगर
5. वित्तीय एंव बीमा नगर
6. व्यवसायिक नगर
7. व्यक्तिक सेवा नगर
8. प्रशासनिक नगर
9. परिवहन एवं संचार नगर
10. विविध कार्यों के नगर – ये आकार में सबसे बड़े होते है।

स्कॉट एवं मैसन ने 1962 ई0 में बहुचर विधि का प्रयोग करते हुए ब्रिटिश नगरों को 14 भागों में बांटा है। इस कार्य में 67 चरों का प्रयोग किया है। उन्होंने कहा कि विभिन्न देशों के लिए अलग–अलग चर हो सकते है। यह वर्गीकरण नगरों के कार्यिक विशेषता का अधिक वैज्ञानिक विश्लेषण करता है।

नगरों को निम्न 14 भागों में बांटा गया है–

1. समुद्र तटीय स्वास्थ्य केन्द्र
2. वाणिज्यिक केन्द्र सह प्रशासनिक नगर
3. औद्योगिक सह वाणिज्यिक नगर
4. रेलवे जंक्शन
5. प्रमुख बंदरगाह नगर
6. वस्त्र उद्योग के नगर
7. औद्योगिक नगर
8. नवीन औद्योगिक नगर
9. उप नगर
10. मिश्रित उपनगर
11. नवीन मिश्रित उपनगर,
12. हल्के उद्योगों का नगर
13. पुराने औद्योगिक उपनगर
14. नवीन औद्योगिक उपनगर।

वर्तमान समय में नगरीय वर्गीकरण के अर्न्तगत इस योजना को सर्वाधिक मान्यता प्राप्त है। लेकिन सबसे बड़ी खामी उसकी यह है, कि उसमें नगरीय कार्य करने वाली सभी वस्तुओं को नहीं रखा गया है, सिर्फ वही नगर रखे गए है, जो नगरीय मान्यता रखते है, फिर भी जनांकिकी और ऐतिहासिक तथ्यों को रखने के कारण यह योजना व्यापक मान्यता रखती है।